वास्फा के प्रणेता एवं शुभ्रशिखर व्यक्तित्व के मालिक पद्मश्री कृष्णदेव दीवान का जन्म 22 फरवरी 1918 ई0 को सम्प्रति पाकिस्तान के पश्चिमी पंजाब स्थित गॉव जामपुर जिला डेरागाजीखान में हुआ था। इनके माताश्री का नाम श्रीमती लक्ष्मी देवी और पिताश्री का नाम श्री तुलसीदास दीवान था। चुकि यह परिवार एक सम्पन्न कृषक परिवार था। अतएव, पंजाब के तत्कालीन महाराजा श्री रंजीत सिंह के द्वारा इस परिवार को दीवान की उपाधि से नवाजा गया था।

श्री दीवान की शिक्षा–दीक्षा स्थानीय स्तर पर पंजाब में ही हुई थी और सन् 1940 में लायलपुर विश्वविद्यालय से इन्होनें कृषि में स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

भारत विभाजन के बाद 1949 में इनका परिवार विभिन्न जगहों पर घुमते–फिरते नीलोखेड़ी अवस्थित हुआ। उस वक्त निलोखेड़ी पूर्णतः एक जंगल था और उस जंगल को अपने स्तर से ये सारे विस्थापित अपनी मेहनत और लगन से कृषि योग भूमि में परिवर्तित कर सके। ये सारे कार्य तत्कालीन भारत सरकार के सामुदायिक विकास के सहयोग एवं स्थानीय स्तर पर एक समिति बना कर पूर्ण किया गया। इस समिति के अच्छे कार्यो के कारण ही भारत सरकार का प्रथत ग्रामीण विकास के लिए एक स्वसाशित संस्था निलोखेड़ी में स्थापित की गई। इस संस्था के कार्यकलापों में स्व0 पद्मश्री दीवान का काफी बड़ा योगदान था और वस्तुतः उसी संस्था में किये गये कार्यो के कारण श्री दीवान का चयन उस वक्त के तत्कालीन ग्रामीण विकास से जुड़े हुए लोगों ने श्री दीवान को वैशाली में कृषि विकास हेतु कार्य करने के लिए चयनित किया। बाद में वैशाली के कार्यो से प्रभावित हो कर food and agriculture organization, CAPART एवं वृत्तदात्री संस्थाओं ने वैशाली के विकास के लिए कार्य योजना बना कर इस कार्य को अंजाम तक पहुॅचाया। स्व0 दीवान जी की ग्रामीण विकास के कार्यो से प्रभावित हो कर ना सिर्फ केन्द्रीय वित्त विभाग ने इन्हें सेन्ट्रल बैंक ऑफ इन्डिया के निदेशक मण्डल के लिए चयनित किया बल्कि इन्हें भारत सरकार के तत्कालीन महामहीम राष्ट्रपति श्री ज्ञानीजैल सिंह के द्वारा 26 जनवरी 1986 में पद्मश्री से भी नावाजा गया।

स्व0 पद्मश्री कृष्णदेव दीवान के कर्मठता एवं लगनशीलता के फलस्वरुप ही उत्तर बिहार के चार जिलें वैशाली, मुजफ्फरपुर, पूर्वी चम्पारन और पश्चिमी चम्पारन में कुल 20 संस्थायें 1000 – 1000 परिवार को समाहित कर एक पूर्ण कृषि विकास योजना, कृषि एवं कृषि आधारित कार्यक्रम लागू की गई। 1970 और 1980 के दस्क में ग्रामीण स्तर पर ग्रामीण विकास के लिए कोई भी आधारभूत संरचना सरकारी या गैर सरकारी संगठनों के द्वारा निर्मित नही हो सका था। परन्तु स्वर्गीय दीवान के कर्मठता एवं लगनशीलता के कारण ही बिहार के अतिपिछड़े इलाके तक ग्रामीण विकास की खुशबू पहॅूच सकी। किसी भी आगन्तुक को आज भी उन आधारभूत संरचनाओं को देख के यह सोचना पड़ता है कि इन चीजों का निर्माण अवश्य ही किसी मनीषि ने किया होगा। अन्ततः श्री दीवान 27 सितम्बर 2002 को अपने निलोखेड़ी स्थित आवास पर अपनी पत्नी, तीनों पुत्र एवं पुत्रवधूओं के समक्ष अपने मानव शरीर का परित्याग कर ब्रह्म में विलिन हो गए। शेष रह गए उनके कार्य, उनकी निष्ठा, तत्परता, कर्मठता एवं इमानदारी जो अगली पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन है।